युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह

18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021

कथा

प्रेस विज्ञप्ति

19 सितम्बर, 2021 गोरखपुर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 52 वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की सातवीं पुण्यतिथि के अवसर पर चल रहे श्रीमद्भगवतगीता के भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में ''श्रीराम एवं श्री कृष्ण कथा का तात्विक विवेचन'' विषय पर आज तीसरे दिन कथा व्यास जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज 'विद्याभास्कर' व्यासपीठ से कहा कि भागवतपुराण पुराणों का तिलक है। कथा के पूर्व जो कीर्तन करते हैं उस कीर्तन से भक्ति अपने आप ही आ जायेगी, क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण तो कीर्तन में वास करते हैं। मान की भावना से ऊपर उठकर जो दूसरों को मान देते हुए कीर्तन करता है भगवान स्वयं उसके समीप आते हैं। ज्ञान वह भाव है जो नीरस में भी रस देख ले। कीर्तन में तो रस भरा पड़ा होता है। भगवान स्वयं कहते हैं कि मैं भक्तों को छोड़ता नहीं हूं और न ही भक्त मुझे छोड़ता है। उन्होंने रामजी हमारे राम जी के हम भजन गाया तो सभी भक्त भक्तिभाव में झूम उठे। कथा को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा कि भगवान तो कण-कण में है वह भक्ति और ज्ञान से पहचाने जा सकते हैं । जो भगवान को पहचान लेगा वह संपूर्ण जगत को प्रणाम करता है। जब हमारे अंदर संपूर्ण जगत को प्रणाम करने की भावना जग जाएगी तो जातिवाद, आतंकवाद, क्षेत्रवाद सब खत्म हो जाएगा।

कथा व्यास ने कहा कि हमारे इतिहास के साथ बहुत छेड़छाड़ कम्युनिस्टों के द्वारा किया गया है । हमारे महापुरुषों को इतिहास में बहुत दबाया गया । नालंदा विश्वविद्यालय के महत्ता को खत्म कर दिया गया । दुर्भाग्य का विषय है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय और मानसरोवर झील जैसी धरोहर हमारे हाथ से निकल गई क्योंकि देश का नेतृत्व नेहरू जैसे हिंदू विरोधी और साहस न करने वाले व्यक्ति

के हाथ में था। उस समय ऐसे कानून बनाए गए जिससे हिंदू कम हुए और मुस्लिम अधिक। हम अपने भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के लिए कुछ कहे तो हम आतंकवादी हैं और भारत के टुकड़े करने वाले देशभक्त। ऐसी भावनाओं को परास्त करने के लिए आज मोदी और योगी को राष्ट्र की आवश्यकता है। ये दोनों व्यक्ति नहीं हैं दोनों एक परंपरा है एक विचारधारा है। हमें राम मंदिर के निर्माण के इतिहास को जानना होगा। राम भक्तों की सरकार केंद्र व प्रदेश में नहीं होती तो सब कुछ तुष्टिकरण की भेंट चढ़ गया होता। अगर हमने जातिवाद का जहर पिया और पुनः राम भक्तों की सरकार नहीं बनाई तो काशी-मथुरा तो दूर हम श्रीराम मंदिर का भी निर्माण नहीं करा पाएंगे। भगवान श्रीकृष्ण भी इसी तरह से धर्म की स्थापना के लिए काम करते थे। इसलिए भागवत की कथा का तत्व यही है कि भगवान श्री कृष्ण की तरह सोचें। मठों के बारे में बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि मठ वह है जो छात्र आदि का निलय अर्थात जहां छात्र पढ़ते हो, जहां संत रहते हो, जहां गाय रहती है और इन छात्रों को शास्त्रों के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की भी शिक्षा देनी चाहिए ताकि राष्ट्र पर जब संकट आवे तो सेना में सीधी भर्ती हो जाएं और राष्ट्र की सेवा करें। इसी प्रकार की शिक्षा पद्धति से महापुरुष पैदा होते हैं। आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति जो मैकाले द्वारा पोषित है उसमें राणा प्रताप, शिवाजी, शंकराचार्य, विवेकानंद, हेडगेवार, रामानुजाचार्य, महन्त दिग्विजयनाथ जैसे महापुरुष नहीं पैदा हो सकते हैं। यह सब संस्कार युक्त गुरुकुल परंपरा में ही संभव है।
महाभारत के युद्ध के पूर्व भगवान श्री कृष्ण से दुर्योधन और अर्जुन दोनों सहायता मांगने गए थे दुर्योधन ने सेना मांगी और अर्जुन ने कृष्ण को मांगा। जो कृष्ण को मांगता है वही विजई होता है क्योंकि श्रीकृष्ण में धर्म है, संयम है जबकि सेना शक्ति है अहंकार है और अहंकार से अधर्म होता है। धर्म और अधर्म में सदैव धर्म की विजय होती है। धैर्य और क्षमा से बढ़कर कोई अस्त्र नहीं है। हर धर्म इसको स्वीकार करता है। क्षमा रुपी अस्त्र को सदैव हमें अपने पास रखना चाहिए क्योकि सबसे मजबूत और प्रभावशाली अस्त्र यही है। कथा व्यास ने कहा कि व्यक्ति छोटा पाप करता है उसका समय फल समय आने पर मिलता है किंतु उत्कट बड़े पाप का फल 3 वर्ष ,3 माह ,3 पक्ष या 3 दिन में ही मिलता है। भारतीय संस्कृति व भारत देश के साथ

बहुत सारे खड़यंत्र रचा गया। हमें अपने वैदिक संस्कृति को भूलवाने का प्रयास किया गया। हम मनुष्य भगवान मनु व आज माता शतरूपा के संतान है। भाषा विज्ञान के माध्यम से उन्होंने समझाया कि फारसी भाषा में हब्बा शब्द संस्कृत शतरूपा शब्द का अपभ्रंश है। हमारे शास्त्रों को मूल रूप में समझने के लिए व्याकरण शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है। पृथ्वी पर उपलब्ध सभी पदार्थों के सेवन करने का नियम है।विज्ञान भी नियम विपरीत सेवन करने से वरदान से अभिशाप बन जाता है। भगवान के विराट रूप का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से हमारे शरीर में मलाशय व मूत्राशय होता है उसी तरह भगवान के संसार रूपी शरीर में नर्क लोग भी होता है। भगवान के नाम पर अपराध करना सबसे बड़ा अपराध है। भगवान के नाम का स्मरण किए बिना इस संसार से उद्धार संभव नहीं।

कथा का समापन आरती और प्रसाद वितरण से हुआ। मंच संचालन श्री गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ अरविंद कुमार चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर योगी कमलनाथ जी महाराज, चेताईमठ के महन्त पंचानन पुरी, महन्त रविन्द्रदास जी महाराज, श्री अतुल सर्राफ, श्री गंगासागर राय, श्री अजय कुमार सिंह, श्री महेश पोद्दार, श्री विकास जालान, श्री शिवाकान्त शास्त्री, श्री प्रदीप जोशी, श्री अरुण कुमार अग्रवाल, श्री अवधेश सिंह, श्री विवेक सूर्या, श्री हिमांशु गुप्ता, ओम प्रकाश कर्मचंदानी, श्रीमती मीरा यादव आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।